ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021

Anthology : The Research

प्रभा खेतान के लेखन में सामाजिक बदलाव के संकेत

Signs of Social Change in the writings of Prabha Khaitan

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

सुमन रानी मक्कड़
हिंदी सह-आचार्य
स्व पंडित नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय
दौसा (राजस्थान), भारत

Abstract

प्रभा खेतान अपने चिंतन और लेखन से यह प्रमाणित करती है कि वे आधुनिकता की पक्षधर हैं और आधुनिक विसंगतियों से लड़ने के लिए नारी को सक्षम बनाने की दृष्टि से बहुत सकारात्मक है। वह यहीं चाहती है कि विषम से विषम परिस्थितियों में नारी की गरिमा और नारी की स्वतंत्रता सुरक्षित रहनी चाहिए।

Prabha Khaitan proves with her thinking and writing that she is in favor of modernity and is very positive in terms of enabling women to fight against modern anomalies. It is here that she wants that the dignity of women and the freedom of women should be protected in the most difficult of circumstances.

मुख्य शब्दः स्त्री का संघर्ष, सामाजिक चेतना, नारी मुक्ति, शोषण-आर्थिक व सामाजिक स्तर पर, प्रभा खेतान।

Women's struggle, social consciousness, women's liberation, exploitation. At the economic and social level, Prakhetan.

प्रस्तावना

मानव समाज की प्रकृति सदा से ही परिवर्तनशील रही है। समाज निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया में गुजरता रहता है तथा अनुपयोगी मूल्यों को अस्वीकार करते हुए नये मूल्यों के स्वीकार के साथ समाज की संरचना में निरन्तर बदलाव होते रहते है। यह अवश्य है कि परिवर्तन की यह प्रक्रिया कभी बहुत तीव्र तो कभी बहुत धीमी हो जाती है। स्त्री जीवन के सम्बन्ध में परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी होती है और कभी-कभी तो वह ठहरी हुई भी लगती है। यदि हम प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल की स्त्री तक के जीवन का मूल्यांकन करे तो ऐसा लगता है कि स्त्री के जीवन में बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं हुऐ है। जबकि मनीषी यह दावा करते हैं कि स्त्री का जीवन निरन्तर परिवर्तनशील रहा है। लेकिन यदि हम पुरुष मानसिकता के संदर्भ में स्त्री की स्थिति का आकलन करें तो यह हम यह निष्कर्ष भी निकाल सकते है कि स्त्री आज भी आदिम स्त्री की तरह सामाजिक बंधनों में बंधी हुई है। वस्तुतः हमें स्त्री जीवन के परिवर्तन की दिशाओं का अवलोकन अनेक दृष्टियों से करना होगा।

स्त्री को लेकर पुरुष के मन में अनेक प्रकार की शकाएँ प्राचीन काल से ही रही है। इस दृष्टि से 'सिमोन द बोउवार' अपनी 'The Second Sex' कृति में प्रश्न करती है।

'क्या औरत वास्तव में 'केवल' औरत है? ..... ''बहुश्रुत पंडितजन ठंडी सांस भरकर कहेंगे, औरत भटक गई है। औरत, औरत नहीं रहीं।'' क्या यह सब सच है? आधुनिक औरत यदि परम्परागत औरत नहीं, तो क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि आज की दुनिया में औरत का सही स्थान और सही रूप वस्तुतः क्या है? वस्तुतः उसकाकौन-सा दर्जा होना चाहिए ?''1

हमारे प्राचीन मनीषियों ने भी इस विषय में अपने विचार रखें हैं। हमारे शास्त्रों में स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है किन्तु इतनी प्रगति पाने पर भी समाज में चाहे भारत में हो या दुनिया के किसी भी कोने में स्त्री की हालत बिगड़ती जा रही है। आदिकाल में स्त्री के व्यवहार का क्षेत्र केवल घर के चार दीवार के बीच में थी किन्तु स्थिति बदल गई दुनिया के हर कोने में, हर क्षेत्र में वह अपने कदम तो रख रही है। फिर भी पितृसत्तात्मक दुनिया में अब भी वह कैद है। घर नामक सुरक्षा के पिंजड़े में उसे बन्द रखा है। उसके इर्द-गिर्द सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जंजीरे है उसे अहसास दिलाया गया है कि घर ही उसकी जिन्दगी है। उसकी अस्मिता एवं अस्तित्व की कोई पहचान ही नहीं। दूसरां के लिए मर मिटना ही उसकी नियति है। मर्दवादी समाज ने उसे कभी आगे बढ़ने नहीं दिया। स्त्री को अपनी इच्छा-शक्ति एवं आत्मबल से पितृसत्ता द्वारा लिखित सारे नियमों को तोड़ना है। अपनी आसूँ भरी नियति को नकारना है। स्त्री की चुप्पीको तोड़ना है,

उसे अभिव्यक्ति का मौका हर जगह देना है। स्त्री की समस्या को गहन रूप से देखने-परखने की शक्ति महज एक स्त्री की सोच में ही हो सकती है। स्त्री साहित्य वस्तुतः स्त्री की आत्मानुभूति है यानि अनुभूति आज तक दबी हुई थी दमित थी, उत्पीड़ित थी एवं पुरुष समाज द्वारा बहिष्कृत भी थी।[2] कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री को लेकर विश्व के मनीषियों में सदा से बहस रहीं है। शायद इस का कारण यह है कि -

'परिवार अब भी स्त्री की सब से मजबूत जमीन है। यह उसका अपना निजी क्षेत्र है। अपनी जमीन पर खड़ी होकर वह जितनी मजबूती से आने वाले समय का सामना कर सकती है, उतना अन्य किसी जमीन पर नहीं। अब परिवार का कŸार् स्त्री बने या पुरुष ही रहे, पारिवारिक संरचना अधिनायकवादी हो या जनतांत्रिक, यह अलग चिन्तन का विषय है। पर हमारे कुछ अपने जातीय मूल्य है जिनकी स्वीकृति के बिना आगे बढ़ना संभव नहीं है। अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित कार्यजगत में सफलता के साथ स्त्री अपने परिवार का कल्याण जरूर चाहेगी और अपनी इस नयी भूमिका में बेहतरी की ओर अग्रसर होना चाहेगी। भविष्य में वह और अधिक सक्रिय होगी या थकी हुई निष्प्राण दिखेगी, यह तो वक्त बताएगा पर इन देनों क्षेत्रों में किसने क्या पाया और क्या खोया, इसका आकलन जरूरी है। इसमें संदेह नहीं कि नए प्रतिमानों की खोज का सम्बन्ध स्त्री जीवन के निजी और सार्वजनिक स्पेस से सम्बन्धित है। किसी भी तरह का अर्मूत सारतत्ववादी रूझान अवैज्ञानिक और निरर्थक है।[3]

इस का तात्पर्य यह है कि प्रभा खेतान यह मानती है कि स्त्री के जीवन में परिवर्तन की गति इसलिए धीमी रही हैं क्योंकि उसके लिए कुछ ऐसी मर्यादाएँ तय कर दी गई हैं जो उसके जीवन को एक सीमित दायरे में बांधे रखतीं है। लेकिन विश्व में नारीवाद की जो चेतना आई है उसने नारी के साथ पुरुष को भी स्त्री मुक्ति के सवालों पर सोचने को विवश किया है और विश्वभर में नारी मुक्ति के आन्दोलन सक्रिय हुए है। हमारे देश में महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियाँ' में लिखा है। "समाज ने स्त्री के सम्बन्ध में अर्थ का ऐसा विषम विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर संपन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है। वह केवल उŸाराधिकार से ही वंचित नहीं है, वरन् अर्थ के सम्बन्ध में सभी क्षेत्रों में एक प्रकार की विवशता के बंधन में बंधी हुई है। कहीं पुरुष ने न्याय का सहारा लेकर और कहीं स्वामित्व की शक्ति से लाभ उठाकर उसे इतना अधिक परावलंबी बना दिया है कि वह पुरुष सहायता के बिना संसार-पथ में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती।[4]

कहने का तात्पर्य यह है कि विश्व भर में सामाजिक स्तर पर स्त्री जीवन में बदलाव की चेतना प्रबल हुई है। स्वयं स्त्रियों ने अपने अस्तित्व को और अपने व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से स्थापित करने के लिए आन्दोलन किए है। महादेवी वर्मा, सिमोन द बोउवार, कैट मिलैट, जर्मन ग्रीयर जैसे नारीवादी लेखिकाओं का लेखन और उनकी सक्रियता इसका प्रमाण है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रभा खेतान के लेखन में सामाजिक बदलाव के संकेतों का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि

प्रभा खेतान की स्त्री विषयक दृष्टि का विकास

प्रभा खेतान उन महिलाओं की कोटि में आती हैं जिन्होंने स्त्री मुक्ति आन्दोलन को आगे बढ़ाया है और समाज परिवर्तन के लिए अपरिहार्य माना है। प्रभा खेतान का जीवन एक घोर सामंती और संकीर्ण वातावरण में व्यतीत हुआ। इस जीवन की संकीर्णताओं से निकलने के लिए प्रभा खेतान ने अपने अध्ययन को तो व्यापक बनाया ही अपने दृष्टिकोण को भी बहुत आधुनिक बनाया। जिस मारवाड़ी परिवार में उन्हें अपने असुन्दर होने के कारण उपेक्षा झेलनी पड़ी उसी परिवार और उसकी परम्पराओं के प्रति उन्होंने विद्रोह भी किया और अपने अध्ययन और अपने क्रियाकलापों से उनका अतिक्रमण करते हुए अपने लिए नयी राह बनायी। "बाजार के बीच बाजार के खिलाफ' नामक कृति में वे लिखती है। 'आज भी स्त्री छुपे हुए अन्याय, रूढ़ियों और अनाम समस्याओं से जूझ रही है क्योंकि वह भुक्त भोगी है। दशकों से समान काम और समान वेतन की माँग करने वाली स्त्रियाँ, मातृत्व और पत्नीत्व की आरोपित भूमिकाओं से मुक्ति चाहने वाली स्त्रियाँ आज बिल्कुल भिन्न मुद्दे का सामना कर रही है। उन पर सांस्कृतिक दबाव है कि वे अमीर बने और उत्पादक बनें। भूमंडलीकरण ने दो व्यक्तियों के आय पर आधारित परिवार को आदर्श के रूप में रख दिया है और स्त्री के मन में उपलब्धि का यह नया अहसास कि उसके पास परिवार और कार्य दोनों है।[5]

वर्तमान दौर में कॉरपोरेट पूंजी स्त्री का नया खड़ा होता दुश्मन है। बाज़ार स्त्री का वस्तुकरण करता जा रहा है। आज स्त्री बाज़ार द्वारा संचालित होती सी नजर आती है। पितृ सत्ता के जाल से निकलती हुई स्त्री भूमंडलीय उपभोक्तावादी ब्रांड संस्कृति में फंसती जा रही है।[6]

परिणामस्वरूप स्त्री जीवन की नई भूमिकाएँ और इन भूमिकाओं से जनित स्त्री शक्ति के बावजूद व्यापक स्तर पर स्त्री को नई असमानता और असुरक्षा का सामना करना पड़ा है।[7]

आज की नारी विभिन्न समस्याओं से संघर्षरत है। अर्थ और सेक्स के धरातल पर उसका शोषण होना आम बात है। प्रभा खेतान स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त करके न केवल परिवार की सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं बल्कि व्यवसायिक आत्मनिर्भरता के लिए संघर्ष करती हुई स्वयं को स्थापित करती है। वे स्वयं विवाह नहीं करती लेकिन स्वतंत्र रहकर एक श्रेष्ठ उद्यमी के रूप में स्वयं को स्थापित करती है।

'छिन्नमस्ता' की प्रिया भी अर्थ और काम के धरातल पर कुचली जाती है। वह अपने शोषण के विरोध में खड़ी रहकर विभिन्न चुनौतियों को स्वीकार कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण कर आत्मनिर्भर बनने के लिए संघर्ष करती है।

'समाज में नारी पर जितने अत्याचार, अन्याय हो सकते है, सारे प्रिया पर होते है पर वह इससे दयनीय, निराश नहीं होती अपितु इससे बाहर निकलने के लिए सारी शक्ति लगा देती है। उसका काम उसके सीमित अनुभव विश्व को व्यापक बनाता है।[8] प्रिया की कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें निरन्तर शोषण की कड़ी है जिनका सामना करके प्रिया नयी राह पर चल पड़ती है।

परिवार की संस्था में हुए परिवर्तनों से स्त्री-पुरुष के नैतिक आचरण में भारी बदलाव आया है। परिवार नियंत्रण को प्रोत्साहित करने से माँ की भूमिका पर सवालिया निशान लगा। इन बातों ने हर देश की स्थानीय परम्परा को प्रभावित जरूर किया। इसी के साथ युवावर्ग की स्वतंत्रता के साथ जो संस्कृति उभर रही थी उसमें पितृसŸाा की भूमिका में क्रमशः कमी आती गई। युवा वर्ग जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निर्णय लेने लगा तथा किसी भी प्रकार के दबाव और बंधन को चुनौती मिलने लगी। परिणामस्वरूप सामाजिक बुनावट और मूल्य व्यवस्था चरमराने लगी। अस्सी के दशक में इसी उभरती हुई संस्कृति पर बाजार व्यवस्था ने मोहर लगाई और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का जयघोष हुआ।[9]

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का स्त्री जीवन में निषेधक प्रभाव रहा है। स्त्री वंचित एवं उत्पीड़ित कोटि के रूप में राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में प्रकट हुई है। दक्षिणपंथियों का कहना था कि चूंकि संविधान में समान अधिकार मिलने की वजह से आर्थिक, राजनीतिक और पारिवारिक क्षेत्रों में मिले हुए अधिकारों का प्रयोग स्त्री ने अपने बाहरी जीवन में किया इससे स्त्री समस्याएं सतह पर उजागर हुई। एंगेल्स और मार्क्स का कहना है स्त्री को तभी मुक्ति मिल सकती है, जब वह उत्पादन के विकसित औद्योगिक क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाए। मगर भारत ही क्यों समाजवादी देशों में भी स्त्री अपनी यह पहचान नहीं बना पाती। कार्यक्षेत्र में उससे भेदभाव किया गया, परिवार में पुरुष वर्चस्व बना रहा। अतः नारीवाद को समाजवाद से निराशा ही हाथ लगी।[10]

हमारे समाज में व्यवस्था को तोड़ने वाली औरत को कोड़े मिलते है और पुरुष को क्रांतिकारी कहा जाता है। यह सच्चाई प्रिया यहाँ समझाती है। पुरुष जब अपनी सŸाा को हारने लगता है तब वह हर बात की कीमत माँगकर अपनी सŸाा को बचाकर रखने का प्रयास करता है। नरेन्द्र के व्यवहार से भी प्रिया को यही बात दिखाई देती है। पति-पत्नी के सम्बन्धों के संदर्भ में भी प्रिया महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचती है। उसे यह लगता है कि चेतनाहीन स्त्री ही विवाह संस्था को बचाकर रख सकती है। अन्यथा इसकी नींव बहुत कमजोर है।[11]

"वास्तव में विवाह की सारी व्यवस्था ही इस भाव पर आधारित है और जहाँ स्त्री की चेतना विकसित होने लगी है, वहीं यह व्यवस्था चरमराने लगती है।"[12]

प्रभा खेतान के विचार उन सभी नारियों से मिलतें है जिन्होंने स्त्री मुक्ति आन्दोलन का झण्ड़ा उठाया है। वे वैचारिक स्तर पर उदारीकरण के दौर में स्त्री के बदलाव को भी रेखांकित करतीं है और उसकी शक्ति का भी परिचय देती हैं। वर्तमान नारीवाद दौर में स्वतंत्र होना, बंधन मुक्त होना ही युगधर्म है। लड़कियाँ भी दोस्त हो सकती है, पुरुष तो महज एक पात्र है। आज की स्त्री अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ खड़ी है, वह स्थापित है। सत्ता के साथ सीधी बातचीत करने में समर्थ है। गोपाल राय जी अनुसार 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के द्वारा प्रभा जी के स्त्री विमर्श एवं स्त्री चिन्तन के साथ-साथ उनकी आत्मकथा की एक झाँकी भी मिलती है। यह स्त्री वर्ग को एक नई दिशा एवं प्रेरणा देने में सफल स्थापित हुआ है। अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की पहचान बनाए रखने के लिए पुरुषवादी समाज से लड़ने की ताकत प्रदान करता है।[13]

भूमंडलीकरण दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति का बहिष्कार संभव भी नहीं। इसे रोकने में सभी असमर्थ है और स्त्री संन्यासिनी होना नहीं चाहेंगी। आज की स्त्री एक सबलीकृत इंसान की छवि पेश करना चाहती है - आज की नायिका रोती-बिसूरती नहीं, वह शक्ति सम्पन्न है, सŸाा के साथ मोल-भाव करने में सक्षम, वह सदाबहार दिखना चाहती है। इसके लिए वह डॉयट, कसरत, मालिश, नये से नये फैशनेबल कपड़े-गहने सभी कुछ चाहती है - वह अपनी बेटी जैसा दिखना चाहती है। क्या उपभोक्तावाद एक और बड़ी गुलामी नहीं जिसे आज की स्त्री स्वेच्छा से अपनाती जा रही है।[14]

स्त्री पहचान की भूखी है और पहचान स्थापित करने के लिए वह इन उपभोक्ता वस्तुओं का शिकार होती है क्योंकि ये चीज़े उसकी पहचान को स्थापित करने का वायदा करती है। चीज़ों की खरीद से एक हैसियत बनाना ज्यादा आसान है। उसके लिए ये सारी काम्य वस्तुएँ यौन संतुष्टि का माध्यम है, वह इन्हें पाना चाहती है। स्पष्टतः उपभोक्तावाद ने औरत के लिए एक खूबसूरत जेल का आविष्कार किया है।[15]

वैचारिक स्तर पर ही नहीं बल्कि नारी के आधुनिक रूप को भी प्रभा खेतान ने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। जैसे 'छिन्नमस्ता' की 'प्रिया' के बारे में वैशाली देशपांड़े का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

'छिन्नमस्ता की 'प्रिया' में जब चेतना निर्माण होती है तब उसका आधुनिक रूप हमारे सामने आता है। पति नरेन्द्र के तीव्र विरोध को सहते हुए वह अपने व्यवसाय को बढ़ाती है। इस व्यवसाय के साथ-साथ उसकी अस्मिता का विकास होकर उसके स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण होता है। उसकी पहचान को मिटाने को प्रयत्नरत पति से हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़कर वह हर रिश्ते को मिटा देती है। अपना अस्तित्व बनाये रखने के

लिए उसे अपने बेटे संजू का भी त्याग करना पड़ता है। प्रिया का यह व्यवहार आधुनिक नारी के उस रूप को उद्घाटित करता है जो पुरुष प्रधान समाज के अत्याचार के विरोध में खड़ी रहकर अपनी क्षमता को साबित करती है। शोषण के सामने चुनौती बनकर खड़ी रहने की क्षमता आज की नारी में आ चुकी है और प्रिया उसी नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है।[16] सच में आज भी स्त्री के लिए प्रिया एक प्रेरणादायक एवं प्रेरक शक्ति है। आम स्त्री की तरह अपनी हालात से समझौता करके चुप रहने वालों से नहीं है प्रिया! प्रिया अच्छी तरह जानती है कि एक स्वावलम्बी स्त्री के लिए अपनी पारम्परिक सीमाओं को तोड़ना बहुत आसान होता है। यह कहानी नारी के अस्तित्वबोध एवं आत्मबोध की है। स्त्री के इर्द-गिर्द जो भी बंधन है उनका विरोध, संघर्ष करती हुई, किसी भी सम्बन्ध को अपनी शर्तों पर बना रखने वाली कहानी है।[17]

स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देने वाली प्रभा ने 'पीली आँधी' उपन्यास में अलग ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में स्त्री ने प्यार के लिए पारिवारिक संस्था को तिलाजंलि दी है। स्त्री के शोषण, कुंठा, मन के द्वन्द्वआदि को इस उपन्यास में अभिव्यक्ति मिली है। स्त्री के शोषण में पुरुष के साथ स्त्री भी बराबर की भागीदारी निभाती है, वह पुरुष द्वारा फैलाए जाल में भ्रमित होकर स्त्री की ही जड़ें काटती है। वह नहीं जानती कि यह सब उसका अस्तित्व खत्म करने की जालसाजी है।

'पीली आँधी' में राधा द्वारा माधो की बीमार पत्नी के साथ किया गया व्यवहार हो या सोमा के साथ अपनी जेठानियों द्वारा किया गया व्यवहार, वह अनजाने में स्त्री द्वारा किया जाने वाला स्त्री का शोषण ही है।[18]

'पीली आँधी' उपन्यास में सोमा और चित्रा के माध्यम से लेखिका ने नारी जीवन के परिवर्तनों को भी रेखांकित किया है- सोमा व चित्रा के माध्यम से लेखिका ने आधुनिक नारी का परिचय दिया है- सदा-सदा से दबी कुचली स्त्री ने जब अपने अस्तित्व के लिए कदम बढ़ाया, अपने अधिकारों के लिए मुंह खोला तो सŸा पर काबिज़ पुरुष ने यहीं कहा कि इसे होश नहीं यह क्या करने जा रही है। इसका परिणाम क्या होगा, यह नहीं जानती। इसी स्थिति को लेकर सोमा का रोष फूटा है- हाँ, जब औरत अपने लिए रोती है, कुछ मांगती है तब पागल ही कहलाती है।[19]

'पीली आँधी' में एक तरफ आत्म-पीड़ा से ग्रसित स्त्री है तो दूसरी और अपनी जमीन की तलाश में मुक्त स्त्री है। समाज स्त्री को बांधता है मगर उपन्यास में सोमा के रूप में स्त्री समाज के इन बेतुके बंधनों को नकार चुकी है। वह अपने कदम बढ़ाना सीख गई है।[20] सोमा के विद्रोही कदम जब सुजीत सेन के घर तक पहुंचते है, तब उनकी पत्नी चित्रा के आधुनिक विचार भी स्पष्ट होते है। बचपन से ही शिक्षित परिवार के संस्कार लेकर पत्नी-बढ़ी चित्रा आर्थिक स्वतंत्रता को महŸव देती है। सोमा को बी.एड़. करवा के नौकरी लगाने का कŸार्व्य भी निभाती है। वह सोमा से कहती है - "जो तुम्हारे साथ घटा, वह तुम्हारे साथ या किसी और के साथ भी घट सकता है। कम से कम अपने पैर पर खड़ी औरत भीख तो नहीं मांगती।[21]

स्त्री बिना पुरुष के असहाय है, वह समाज में पुरुष के सहयोग से ही अपना अस्तित्व कायम कर पाती है। इन बातों को पद्मावती ने झूठा साबित कर दिया। उसके जीवन में पुरुष की ऐसी कमी कहीं नजर नहीं आती, जिसके कारण वह कहीं कमजोर पड़ती हो। पद्मावती का जीवन स्त्री को अपने आप पर विश्वास करना सिखाता है।[22]

कहने का अर्थ यह है कि प्रभा खेतान अपने विचारों में और अपनी रचनात्मकता में नारी संघर्ष की पक्षधरता करतीं रही है। समाज में घुटती हुई स्त्री जो सदियों से शोषण की चक्की में पीसी जा रहीं है, उस स्त्री का दमित पक्ष उठाना प्रभा की प्राथमिकता रही है। इस उपन्यास में भी स्त्री जीवन के प्रत्येक पक्ष पर लेखिका ने कलम चलाई है। पद्मावती और सोमा जैसे चरित्र गढ़ने के पीछे लेखिका का यहीं उद्देश्य रहा है कि स्त्री का स्वाभिमान ही उसके व्यक्तित्व का निर्माणकरता है।[23]

प्रभा खेतान का संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन

प्रभा खेतान ने अपने व्यक्तिगत जीवन में बहुत संकीर्ण और रूढ़िग्रस्त स्थितियों का सामना किया। परिवार में उन्हें किसी तरह की स्वतंत्रता नहीं मिली और न ही खुलकर अपनी बात कहने की आजादी ही। लेकिन अपने निरन्तर संघर्ष से वे आगे बढ़ती रहीं और स्त्री की स्थिति पर चिन्ता करतीं हुई उसकी स्वतंत्रता के लिए लड़ती रहीं। वे स्त्री की दयनीय स्थिति को आत्मसात करते हुए उसकी स्वतंत्रता के लिए लड़ने का हौसला बनाए रहीं। वे सिमोन के इन विचारों को अपने जीवन में ढालने का प्रयास करतीं रहीं।

'औरत भी अन्य मानव प्राणियों की तरह एक स्वतंत्र और स्वायŸा जीव है लेकिन यही जीव ऐसे जगत में रहता हैं जो उसकी अतिक्रमण की क्षमता को कुंद करके उसको हमेशा के लिए अन्तर्वती अवस्था में रख देना चाहता है। औरत की जिंदगी का नाटक इसी संगति में निहित है। एक ओर वह प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक चाह की तरह स्वयं के लिए तथा जगत के लिए अनिवार्य होना चाहती है तथा सर्वापरिता की ओर अग्रसर होना चाहती हैं और दूसरी ओर उसको उस परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, जो हमेशा उसे नगण्य बनाने पर तुली रहती हैं।[24]'

प्रभा खेतान यह भी मानतीं रहीं कि स्त्री के ऊपर सबसे बड़ा बोझ विवाह का होता है। लेकिन स्वयं विवाह न करके उन्होंने अपने लिए एक नया रास्ता चुना। यद्यपि उन्होंने जैविक दृष्टि से पुरुष के महŸव को अस्वीकार नहीं किया। अपने जीवन में उन्होंने एक पुरुष से सम्बन्ध भी बनाए और इन सम्बन्धों ने प्रभा खेतान को कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया। इसका कारण यह है कि वह अपनी शारीरिक आवश्यकताओं

की पूर्ति किसी नैतिकता के भय के बिना करतीं रहीं और अपनी रचनात्मकता को और वैचारिकता को नये आयाम देतीं रहीं। वह अपने जीवन से सिमोन के इस कथन को प्रमाणित करतीं हैं-

'जिस स्त्री का व्यक्तिगत जीवन समृद्ध और संतुष्ट रहता हैं उसके पास संतान को देने के लिए बहुत कुछ रहता है। वह संतान से बहुत कम आशा भी करती है।''[25]

उन्होंने एक पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी शारीरिक भूख को शांत किया परन्तु संतान पैदा करने का विकल्प नहीं चुना लेकिन एक बच्चे को गोद परन्तु अपनी संतान पाने की इच्छा को पूर्ण किया और अपने दŸाक पुत्र को समृद्धि प्रदान की। प्रभा खेतान 'छिन्नमस्ता' की नायिका 'प्रिया' के माध्यम से स्त्री का आत्मनिर्भरता को स्त्री जीवन के लिए अनिवार्य मानती है।

'प्रभा खेतान कथा नायिका प्रिया के द्वारा हर स्त्री को यह जताना चाहती है कि स्त्री शक्तिकरण के लिए स्त्री का आर्थिक स्वावलंबन बहुत जरूरी ही है। स्त्री की आजादी उसकी पर्स से शुरू होती है। प्रिया का आत्म संघर्ष हर एक नारी का आत्मसंघर्ष है। अपनों के बीच में भी उसका स्थान दोयम दर्जे पर ही है। अतः सभी चुनौतियों से लड़कर दहकता अंगार के रूप में प्रिया का चरित्र हमारे सामने प्रखर एवं तीव्र हो उठता है। पति नरेन्द्र द्वारा बराबर ठोकरे खाकर प्रताड़ित होती प्रिया के लिए प्रेम, विवाह मात्र एक समझौता है - वह कहती है - "मुझे प्रेम, सेक्स, विवाह ये सारे सदियों पुराने घिसे हुए शब्द लगने लगे थे। नहीं, शब्द नहीं, मांस के ताज़ा टुकड़े, लहु टपकाते हुए। इन शब्दों के पीछे की दीवानगी और आदिकाल से चली आ रही परम्पराओं का चेहरा सिर्फ औरत के आँसुओं से तरबतर है।''[26]

नरेन्द्र जैसे पुरुष स्त्री की महत्वाकांक्षा को समझ नहीं सकते। वे एक सफल स्त्री की ओर आकर्षित जरूर होते है, मगर उनके भीतर का पुरुष बस उस स्त्री को दबोचना चाहता है, यानी उसके अहम को सन्तुष्टि मिलती है कि देखो ऐसी औरत भी मेरे वश में है।''[27]

इसी तरह पीली आँधी की पद्मावती और सोमा के चरित्र भी इसी तथ्य को रेखांकित करते है। प्रेम का त्याग करने वाली परम्परावादी पद्मावती आधुनिक विचारों को मन ही मन स्वीकार करती प्रतीत होती है। गौतम द्वारा सोमा को प्राप्त उपेक्षा के कारण ही सोमा सुजीत सेन की ओर आकर्षित हुई तथा सोमा के गर्भ में पलता सुजीत का बच्चा गौतम की गलतियों का ही फल है, ऐसे उनके ठोस विचार है। परिणामतः समस्त परिवार सोमा के विरोध में होने के पश्चात् भी वह सोमा का पक्ष लेती है। परिवार की इज्जत बचाने के लिए वह सुजीत सेन के बच्चे को रूंगटा परिवार का नाम देने को तैयार है। अपने इन विचारों के कारण परिवार के सदस्यों का गुस्सा उन्हें सहन करना पड़ता है लेकिन रामायण, महाभारत के पं्रसगों को सामने रखकर अपने विचारों की सत्यता पर ताईजी कायम दिखतीं हैं। ..... 'निमली द्रोपदी के पांच पति थे। मंदोदरी के नियोग से संतान हुई। तारा पति के रहते हुए चन्द्रमा के घर रह आयी और अहत्या के पेट में इन्द्र का भ्रूण पल रहा था।''[28] परम्पराओं का पालन करते हुए स्वयं उन्होंने जो सहा वह पीड़ा सोमा को न मिले यहीं उनकी इच्छा दिखाई देती है। "उनके मन में परिवार की पुरानी परम्पराओं की रक्षा का भार है, तो दूसरी ओर वे नए से नए बदलावो को भी स्वीकार करने को तैयार है। यो एक परम्परागत स्त्री लगती हुई भी वे एक सच्ची आधुनिका है।'[29] पद्मावती दकियानूसी परम्पराओं, रीतिरिवाज़ों की विसंगतियों को तीव्रता से अनुभूत करती है लेकिन अपनी पीड़ा को दूर करने के लिए इन्हें तोड़ नहीं पाती। लेकिन वक्त आने पर अपने आप में इतना परिवर्तन निश्चित करती है कि आधुनिक समय के कुछ परिवर्तन स्वीकार करने की क्षमता भी अपने अन्दर निर्मित करती है।[30]

निष्कर्ष

आधुनिकता के लिए परिसर और प्रभा खेतान की चिताएँ

प्रभा खेतान अपनी सोच और अपनी रचनाशीलता की दृष्टि से आधुनिक स्त्री है। एक ओर उनकी चिन्ता स्त्री को मुक्ति दिलाने के साथ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता दिलाने की हैं तो दूसरी ओर भूमंडलीकरण और उदारीकरण के कारण नारी जीवन में आये नये-नये संघर्षां से चेतावनी देती है। उदारीकरण के दौर में कॉरपोरेट जगत ने स्त्री को एक नयी तरह की वेश्यावृति की ओर धकेला है। इसका कारण यह है कि कॉरपोरेट जगत नये-नये आकर्षण उत्पन्न करता है और स्त्री के लिए ओर अधिक असुरक्षा की स्थितियाँ पैदा करता है। वह स्वयं कहती है -

'भूमंडलीकृत पूंजीवाद जब नयी चीजों और सेवा की माँग को उकसाता है तभी उपभोक्ता बाजार का विकास होता है। विज्ञापन के जरिए यौन पहचान और स्त्री पुरुष की समानता के बदले उनकी भिन्नता को और अधिक स्थापित करना उपभोक्तावाद को बढ़ावा देता है। भूमंडलीय मीडिया ने न केवल बाज़ार को प्रभावित करने की कोशिश की, बल्कि स्थानीय लोगों के विचारों पर भी हावी होने की कोशिशकी हैं।

स्त्री को जहाँ नये अवसर मिले इससे स्त्री को जो ताकत हासिल हुई उससे स्त्री को लाभ के साथ हानि भी हुई। एक ओर मीडिया में वह जितनी मजबूत और दबंग दिखाई देती हैं तो दूसरी ओर वह नयी तरह की असमानता एवं असुरक्षा झेलने को बाध्य हुई।[31]

प्रभा खेतान यह भी मानती हैं कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया नारी के लिए ओर अधिक भयावह सिद्ध हुई है। नारी भूमंडलीकरण के प्रहारों का सहन करने पर विवश है।

'भूमंडलीकरण अपने आपमें एक द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया है। इससे न केवल शोषण और असमानता बढ़ती है, बल्कि एक वर्ग विशेष के हित में ही सारी पूँजी नियोजित होती रहती

है। भूमंडलीकरण वास्तव में राष्ट्रीय सŸा को कमजोर करता है तथा इसके तहत अमेरिका अपना वर्चस्व एवं वैश्विक दृष्टिकोण अन्य सभी राष्ट्रों पर आरोपित करता है।

परम्परा से स्त्री पर पुरुष हावी है तो अंत में भूमंडलीकृत समाज में श्रम का चाहे जितना स्त्रीकरण हो, सार्वजनिक स्थानों में चाहे जितनी अधिक स्त्रियाँ दिखाई पड़े या गैर सरकारी संस्थाओं में स्त्रियों की चाहे जितनी भागीदारी हो, अन्ततः सोपानीकृत समाज व्यवस्था में वे पुरुष से कमतर ही रहेंगी।

एक ओर बाज़ार की चमक-दमक और उपभोक्तावादी संस्कृति की आर्थिक उछाल है तो दूसरी ओर क्रमशः बढ़ती हुई बेकारी, गरीबी, शोषण और अपराध पर पर्दा डाला जा रहा है।

आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के बावजूद भूमंडलीय स्तर की राजनीति अपने आप में उलझन भरी है। यह राजनीतिक यौनवाद से ग्रस्त है। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री अब भी पराधीन है। बाज़ार की हिमायती राजनीति ने दो काम किये। एक तो वे बड़े जोर-शोर से पारिवारिक मूल्यों की स्थापना करना चाहते है, दूसरी ओर महिलाओं के बाज़ारीकरण को भी स्वीकारते है। माना कि कई प्रांतों की मुख्यमंत्री स्त्रियाँ है और वे अच्छे बहुमत से जीत कर आई है मगर ये खास स्त्रियाँ है। आम स्त्री की पहुँच लोकसभा में नहीं। पंचायत स्तर पर भी नहीं और राजनेता भी स्त्री के हक में नहीं बोल रहींहैं।

समकालीन भारतीय राजनीति में स्त्री की राजनीति में भागीदारी है किन्तु वह प्रभावी हस्तक्षेप करने में असमर्थ है। यह हस्तक्षेप तभी संभव होता है जब वह जमीनी स्तर की स्त्री आन्दोलन से जुड़े।[32]

इसका अर्थ यह हैं कि प्रभा खेतान भूमंडलीकरण के शोषण चक्र का समर्थन तो नहीं करती है किन्तु भूमंडलीकरण की असलियत को स्वीकार करती है। वे चाहतीं है कि आज की स्त्री इन स्थितियों से जूझे और अपनी स्वतंत्र गरिमा को स्थापित करें। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया का विद्रोह प्रभा खेतान के विचारों का प्रतिनिधि करता है।

निष्कर्ष

'छिन्नमस्ता' में प्रिया का विद्रोह एक या दो साल में घटी घटनाआें का परिणाम नहीं है। बचपन से लेकर वैवाहिक जीवन तक घटी घटनाओं की यह प्रतिक्रिया है, जो प्रिया को सभी बन्धनों को नकारकर अपने आपको मुक्त करके अपने अलग व्यक्तित्व का निर्माण करने में प्रोत्साहित करती है। सुदेश बत्रा के अनुसार - "प्रभा खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' की प्रिया उपेक्षा, अपमान, टूटन से उबरकर एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में सामने आती है।"[33]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ 23*
2. *हिन्दी वेबपत्रिका, युगमानस*
3. *प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ, पृष्ठ 27, 28*
4. *शैलेन्द्र सागर, रजनी गुप्ता (सं.), आजाद औरत कितनी आजाद, पृष्ठ 21*
5. *प्रभा खेतान, बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ, पृष्ठ237*
6. *डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ 60*
7. *प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच बाज़ार के खिलाफ, पृष्ठ10*
8. *डॉ. उमा शुक्ल, डॉ. माधुरी छेडा, डॉ. सुमलिका सेठी (सं.), आधुनिक कला साहित्य में नारी स्वरूप और प्रतिमा, पृष्ठ 26*
9. *प्रभा खेतान, बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ, पृष्ठ54*
10. *प्रभा खेतान, बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ, पृष्ठ 62-63*
11. *वैशाली देशपांड़े, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, पृष्ठ 186-187*
12. *प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृष्ठ 203*
12. *प्रो. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृष्ठ426*
14. *प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच, बाजार के खिलाफ, पृष्ठ 229*
15. *वही, पृष्ठ 225-227*
16. *डॉ. वैशाली देशपांड़े, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, पृष्ठ 186*
17. *युग मानस, वेब पत्रिका*
18. *डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ 194-195*
19. *प्रभा खेतान, पीली आँधी, पृष्ठ 256*
20. *डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ 185-186*
21. *डॉ. वैशाली देशपांड़े, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, पृष्ठ 148-149*
22. *डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ 194*
23. *डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ 176-177*
24. *प्रभा खेतान, स्त्री अपेक्षिता, पृष्ठ 31*
25. *वही, पृष्ठ 229*
26. *प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृष्ठ 124*
27. *प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृष्ठ 174*
28. *प्रभा खेतान, पीली आँधी, पृष्ठ 206*
29. *प्रकाश मनु, सदी के आखिरी दौर की महिला उपन्यासकारों के उपन्यास, (लेख), नया मानदण्ड (पत्रिका), जनवरी/मार्च, 2001, पृष्ठ 131*
30. *डॉ. वैशाली देशपांडे, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, पृष्ठ 198-199*
31. *प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच, बाज़ार के खिलाफ, पृष्ठ 244-248*
32. *प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच, बाज़ार के खिलाफ, पृष्ठ 241 से 245*
33. *डॉ. सुरेश बत्रा, साहित्य में नारी मुक्ति चेतना (लेख), मधुमति (पत्रिका)*